युद्ध में विराम एक अपराध होगा

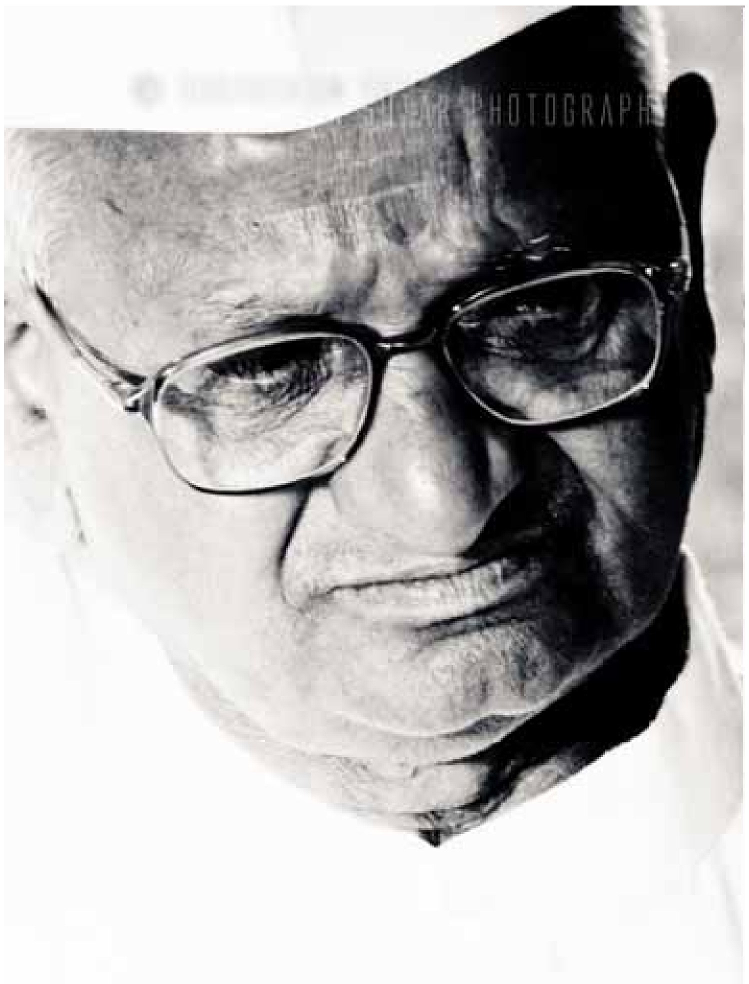

अण्णा हजारे ने करोड़ों के दिल को जीत लिया है. उनने दिलवालों ही नहीं कई दिमागवालों के दिल भी जीते हैं. उन्होंने दिखा दिया कि दिलवालों के भी अच्छे दिमाग होते है, दिमागवालों के दिलों की हसरत चाहे कुछ कमजोर क्यूं न हो. उन्होंने अपने इस सत्याग्रह, साहस और कर्तव्यनिष्ठा से जो हासिल किया है, वह जादुई चमत्कार लगता है.

भ्रष्टाचार की ताकत से बुजुर्ग हताश थे, जवान आक्रोशित और प्रौढ धर्मसंकट में उलझे हुए थे. हम भ्रष्टाचार के बल और अपनी अबलता को स्वीकार कर चुके थे, उसको तरीका ए जिंदगी समझने लगे थे और यह समझने लगे थे कि यह एक दस्तुर, एक रिवाज जो हमेशा के लिये अपनी मुट्ठी में जकड चुका हैं. अण्णा ने उस मुठी को अपनी ताकत से खोल डाला है. भ्रष्टाचार को मौन स्वीकृती मिली थी, अब उसे मुखर चुनौती मिल गई है. भ्रष्टाचार की जकड शिथिल हुई दिखती है. पहले जैसा अब उसमें हुकूमती दंभ नहीं रहा. भ्रष्टाचार अब पलायन की तैयारी में है. यह सब अण्णा की देन है. आम लोगों के ख्याल में सरकार, सत्ता और संसद कुल मिलाकर एक सल्तनत जैसे बन बैठे थे, जिसमें कई अच्छे, नेक, ईमानदार और समर्पित लोग जरुर हैं, लेकिन कई भ्रष्ट और पाखंडी भी है और सभी सत्ताधारी हमसे दूर , हमारी पहुँच से आगे, हमारे आवाज के परे, हमारी निराशाओं से जुडे है और हमारी आशओं से, हमारे अनुभवों से, हमारे सपनों सें काफी अलहदा. यह एक छबि थी. अपूर्व, आंशिक, अधूरी छवि लेकिन यह हमारे दिमागों में एक गहरी स्वाही से मुद्रीत थी, एक तेज श्लाका से अंकित.

लेकिन लोकसभा व राज्यसभा ने जिस तरह अण्णा के अनशन से उठे प्रश्नों और अण्णा की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं पर जो बहस की, और जिस तरह बहस की, उसकी छबि में एक बदलावा आया है. कैसा बदलाव है अनसुनी जब सुन ली जाती है, अनकही जब कह दी जाती है या अनदेखी जब दिख जाती है तब जो बदलाव आता है, वैसा बदलाव. सरकार, सत्ता और संसद से राजपथ से रामलीला मैदान तक की दूरी को जिस तत्परता से मिटाया, वह अदभुत था. प्रणब मुखर्जी का वक्तव्य, जिसमें उन्होंने अण्णा को अपना साधुवाद दिया, अपने आपमें अनूठा था.

लोकसभा में सुषमा स्वराज और संदित दिक्षित और राज्यसभा में अरुण जेटली और सीताराम येचुरी और दोनों सदनों में प्रणब मुखर्जी ने भ्रष्टाचार और लोकपाल के विषय पर जिस गंभीरता, शालीनता और व्यावहारिकता से दृष्टिकोण रखे,वह अपने में संसदीय प्रजातंत्र और संवेधानिकता परिवेशें में समझाया, वह भी आवश्यक था. भोजन में अचार या चटनी के बिना जैसा अधूरापन महसूस हो सकता है, उसी तरह शरद यादव व लालू यादव का व्यंग्य भी आवश्यकता था. सदाचार-विचार में फीकापन नहीं होना चाहिये. अतएव,आज सत्ता समाज के बीच की दूसरी मिटी न भी हो, कम हुई जरुर नजर आती है. सत्ता और संसाद में आत्मविचार और उनके रवैयों में सृजनात्मक परिवर्तन भी अण्णा के आंदोलन और आत्मविश्वास का परिणाम है.

अण्णा को अब क्या करना चाहिये यह उस स्वावलंबी, स्वाभिमानी आदमी को बताने की जुर्रत कौन करेगा लेकिन यकीन है कि उनके आंदोलन ने भी अपने रवैयों व तरीकों में कुछ त्रुटीयां पाई होगी. कुछ-कुछ और कहीं-कहीं कमजोरियाँ और सुधार की गुंजाईश . प्रशांत भूषण जैसे सुलझे हुए व्यक्ति ने, अरविंद केजरीवाल जैसे समर्पित व्यक्ति ने और किरण बेदी जैसी कर्तव्यनिष्ठ महिला ने जरुर आंदोलन के मार्ग पर आत्मविचार किया होगा. एक अहिंसात्मक आंदोलन में, विशेषकर जब वह महात्मा गांधी से प्रेरित हो, कुछ नियमबद्वताओं का होना उसे शोभा देगा. जैसे विचारों और शब्दों में असंयमित, उद्वत और उग्र शब्दों का बहिष्कार, मूल सिद्वान्तों पर अडिग रहते हुए क्रियाविधियों और कार्यप्रणालियों में लचीलापन, स्थिरता और कठोरता के अंतर का ज्ञान, नैतिकता अैर दडात्मकता के अंतर का भान, श्ल्यकार और बूचड के अंतर का ध्यान आवश्यक है किसी पथभ्रष्ट एमपी या मंत्री से सीधा मुकाबला किसी सामूहित प्रांगण या परिसर में करना एक बात है और उसके निवास पर जाकर उन्हें व्याकुल करना दूसरी बात. कोई कितना भी आलोचना के लायक क्यों न हो वह एकांत और गोपन का अधिकारी होता है.

चुनावी व्यवस्थाओं और प्रणालीयों में सुधार की बात, विशेषकर चुनाव प्रचार में धन का दुरुपयोग की बात अण्णाजी ने उठाई. यह बहुत आवश्यक था. इस पर आगे विचार करते वक्त पिछले तीन सीईसी को संयुक्त किया जाए और हमारे विघमान सीईसी की सलाह ली जाए.

न्यायपालिका को लोकपाल विधेयक से बाहर रखने का प्रस्ताव और उसको अण्णाजी का समर्थन भी आवश्यक था. यह आंदोलन के लचीलेपन को दर्शाता है. आज जिस तरह आरटीआई एक्ट समाज का अभिन्न भाग बन गया है, मेरा विश्वास है लोकपाल व लोकायुक्त व्यवस्था भी उसी तरह हमारे जीव का हिस्सा बन जाएगी.

अण्णाजी की मजबूती,उनके ईमान और इससे भी ज्यादा उसकी सुलझी हुई सोच ने मुश्किल को आसान,नामुमकिन को मुमकिन और सपने को सच बनाया है. अब जरुरी है कि जब लोकपाल विधेयक पर संसद के दोनों सदनों में बहस हो, तो आंदोलन के माननीय अग्रणीगण माननीय सांसदों के रचनात्मक बाकायदा ताल्लुक बनाए रखें और भारतवासियों को एक बढ़िया भ्रष्टाचारमोचक कानून दिलाएं. भ्रष्टाचार के विषबीज समाज की मिट्टी में में मिले हुए है यानी हम लोगों में यह भी कडवा सच हमे देखना होगा.

कई कॉपोरेट संस्थाए, कई सोसायटियां, ट्रस्ट और कुछ एनजीओ भी भ्रष्ट तरीकों को अपनाए हुए हैं, जिसमें गैरकानूनी खनन और उससे निकलता प्रदूषण और शोषण शामिल है. मिडिया के कुछ लोग भी भ्रष्ट प्रणालियों से वंचित नहीं हैं. हमें यह याद रखना होगा कि जब किसी को तर्जनी दिखलाई जाती है , तब तीन अंगुलियां हमारी खुद की और मुडी होती है और अंगूठा आकाश को देखते हुए खुदा की मेहरबानी और हमारे अंह पर उसकी मुआफ भी मांगता है.

अण्णाजी की मजबूती,उनके ईमान और इससे भी ज्यादा उसकी सुलझी हुई सोच ने मुश्किल को आसान,नामुमकिन को मुमकिन और सपने को सच बनाया है. अब जरुरी है कि जब लोकपाल विधेयक पर संसद के दोनों सदनों में बहस हो, तो आंदोलन के माननीय अग्रणीगण माननीय सांसदों के उचनात्मक बाकायदा ताल्लुक बनाए रखें और भारतवासियों को एक बढ़िया भ्रष्टाचारमोचक कानून दिलाएं. भ्रष्टाचार के विषबीज समाज की मिट्टी में में मिले हुए है यानी हम लोगों में यह भी कडवा सच हमे देखना होगा.